

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् । कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥

हे पृथापुत्र अर्जुन ! जो पुरुष इस आत्मा को नाशरहित, नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है, वह पुरुष कैसे किसको मरवाता है और कैसे किसको मारता है ।

श्रीमद्भगवद्गीता 2/21

संस्थान निदेशक

प्रो. वी. रामगोपाल राव

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/375407 दिनांक 2.12.2021 के अनुसार आपने संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में 1.12.2021 से प्रोफेसर (HAG स्केल पर) के पद को सुशोभित किया है ।

स्वागत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-1/374256 दिनांक 29.11.2021 के अनुसार प्रो. रोहित वैश ने 25.11.2021 से संस्थान के कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल-11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
प्रो. रोहित वैश को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित "युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप" भी प्रदान की गई है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/376649 दिनांक 7.12.2021 के अनुसार प्रो. राजदीप नायक ने 3.12.2021 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल-11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-II के रूप में

कार्यभार ग्रहण किया है ।

प्रो. राजदीप नायक को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित "युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप" भी प्रदान की गई है ।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/376912 दिनांक 7.12.2021 के अनुसार डॉ. (सुश्री) पियाली मजूमदार ने 2.12.2021 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/376687 दिनांक 7.12.2021 के अनुसार डॉ. यशवंत कोली ने 6.12.2021 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/374509 दिनांक 30.11.2021 के अनुसार डॉ. अरिजीत पाल ने 26.11.2021 से संस्थान के कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/374973 दिनांक 1.12.2021 के अनुसार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सोनी ने 29.11.2021 से संस्थान के यांत्रिक

इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/375749 दिनांक 3.12.2021 के अनुसार डॉ. मोहम्मद खालिद पंडित ने 2.12.2021 से संस्थान के कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/377111 दिनांक 8.12.2021 के अनुसार प्रो. शांतनु कुमार मिश्रा ने 1.12.2021 से संस्थान के आटोमोटिव अनुसंधान एवं ट्राइबोलाजी केन्द्र (कार्ट) में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/373756 दिनांक 26.11.2021 के अनुसार प्रो. अरुण कुमार ने 9.11.2021 से संस्थान के प्रकाश एवं फोटोनिक्स केन्द्र (OPC) में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2021/373803 दिनांक 26.11.2021 के अनुसार प्रो. बेन्जामिन लियोनेल ने 1.11.2021 से संस्थान के प्रकाश एवं फोटोनिक्स केन्द्र (OPC) में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/375361 दिनांक 2.12.2021 के अनुसार डॉ. राहुल सैनी, पोस्ट डॉक्टरल फेलो (यांत्रिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 9.12.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. राहुल सैनी को 9.12.2021 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।
- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-II/2021/376710 दिनांक 7.12.2021 के अनुसार श्री राहुल दिवाकर, वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (विद्युत इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 15.12.2021 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री राहुल दिवाकर को 15.12.2021 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

भारतीय चिंतन का ताना-बाना है स्वावलंबन

डॉ० विजय अग्रवाल

(आध्यात्मिक विषयों के लेखक और वक्ता)

स्वावलंबन की चेतना हमारे भारतीय अध्यात्म चिंतन के केंद्र में रही है। इसके लिए हमारे दार्शनिकों ने दो मूलभूत उपाय किए। पहला यह कि उन्होंने व्यक्ति में ही ब्रह्माण्ड की कल्पना की। दूसरे ऋषि-मुनियों ने व्यक्ति की चेतना को ब्रह्माण्ड तक विस्तृत करने के लिए मानसिक स्वतंत्रता दी.....

वर्तमान में आमतौर पर 'स्वावलंबन' को किसी राष्ट्र की पूर्णतः आर्थिक आत्मनिर्भरता से जोड़कर समझा जाता है। किन्तु भारतीय चिंतन में यह अत्यंत व्यापक, गहरे एवं अनेकांगी रूप में आरंभ से ही मौजूद रहा है। चिंतन के आरम्भ से ही इसके केन्द्र में उसकी मूल चिन्ता इस बात की रही है कि कैसे व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाया जाये। यदि ऐसा हो सका, तो स्वावलम्बी नागरिकों से निर्मित

समाज और राष्ट्र बिना किसी अन्य प्रयास के स्वयं ही स्वावलम्बी बन जायेगा।

यदि ध्यान से देखें, तो हम पाते हैं कि स्वावलंबन की यह चेतना हमारे 'अध्यात्म' चिंतन के केंद्र में रही है। इसके लिए हमारे दार्शनिकों ने दो मूलभूत उपाय किये। पहला यह कि उसने व्यक्ति में ही ब्रह्माण्ड की कल्पना की। उसने व्यक्ति को समुद्र में बूंद न मानकर बूंद में ही समुद्र की समग्रता की बात कही। दूसरे यह कि हमारे ऋषि-मुनि इस मनोवैज्ञानिक तथ्य से भलीभांति परिचित थे कि यदि व्यक्ति की चेतना को ब्रह्माण्ड तक विस्तृत करना है, तो इसके लिए उसे मानसिक स्वतंत्रता प्रदान करनी होगी, ताकि वह अनंत ऊँचाई तक की निर्बाध यात्रा कर सके।

आरम्भ में धर्म ही सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के नीतिशास्त्र एवं संविधान हुआ करता था। फलस्वरूप भारत ने अपने यहाँ जो धार्मिक स्वतंत्रता दी, वह विश्व के किसी भी अन्य धार्मिक पद्धति में दिखाई नहीं देती। छूट दी गई कि व्यक्ति अपने-अपने देवी-देवता बना ले। ग्राम अपने देवता की आराधना कर लें। यह सब अद्भुत था। यह धर्म के लोकतांत्रिकीकरण की इकलौती मिसाल है।

इन दोनों व्यवस्थाओं के फलस्वरूप ऋग्वेद ने 'अहं ब्रह्मास्मि' का उद्घोष किया। यदि इस जगत का निर्माण करने वाला ब्रह्म है, और यदि व्यक्ति स्वयं ब्रह्म है, तो इससे व्यक्ति की क्षमता के बारे में कोई सन्देह नहीं रह जाता। गीता में तो कृष्ण साफ-साफ कहते हैं 'पौरुष नृषु', यानी कि मैं मनुष्यों में सामर्थ्य हूँ। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि वे अर्जुन को बताते हैं कि मैं हाथी में ऐरावत हूँ, ऋतुओं में बसंत हूँ, आदि-आदि। लेकिन जब मनुष्यों में श्रेष्ठतम की बारी आती है, तब वे किसी श्रेष्ठ मनुष्य का नाम नहीं लेते। वे 'सामर्थ्य' की बात करते हैं। इस पृथ्वी का प्रत्येक व्यक्ति सामर्थ्य के इस विलक्षण, सर्वोत्तम दैवीय गुण से युक्त है। यहाँ संकेत स्पष्ट है कि व्यक्ति को किसी अन्य पर अवलम्बित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह अपने हर वांछित फल को प्राप्त करने का सामर्थ्य रखता है।

कृष्ण ने जिसे 'सामर्थ्य' कहा है, हमारे वेदों एवं उपनिषदों में यही ब्रह्म की रचनात्मक शक्ति है, जो विश्व की रचना करने में समर्थ है। छान्दोग्य उपनिषद में उद्दालक अपने पुत्र श्वेतकेतु से कहते हैं, "जिस किसी ने अपनी आत्मा को जान लिया, उसने ब्रह्माण्ड की आत्मा को, ब्रह्म को भी जान लिया।" यानी कि आत्मा ही ब्रह्म है। 'जान लिया' कहने का तात्पर्य है कि 'ज्ञान हो गया'। अर्थात् 'सामर्थ्य' का आभास होना, ताकि उसे परावलम्बित होना न पड़े। 'बृहदारण्यक' उपनिषद में इसी तथ्य को इस रूप में रेखांकित किया गया है कि "जो यह जान लेता है कि 'मैं ही ब्रह्म हूँ,' स्वयं वही बन जाता है।"

हमारे प्राचीन समाज व्यवस्थापकों ने मनुष्य के लिए जिन चार आश्रमों की व्यवस्था की थी, उसके अंतिम दो चरण वानप्रस्थ एवं सन्यास यह कहते जान पड़ते हैं कि "छोड़ो-छोड़ो और जाओ। घर का मोह छोड़ो। धन को त्यागो।" यह संचयन के त्याग की व्यवस्था है, जिसे जैन दर्शन में 'अपरिग्रह' कहा गया है। यह इच्छाओं को नियंत्रित करने का सर्वोत्तम उपाय है। और इच्छाओं पर जिसका जितना नियंत्रण होगा, वह उतना ही अधिक स्व पर अवलम्बित होगा। पतंजलि की दृष्टि में यही योग है—"चित्तवृत्ति निरोधः योगः।" 'मनुस्मृति' में भी धर्म के जो दस लक्षण गिनाये गये हैं, उनमें तीसरी प्राथमिकता 'इन्द्रियनिग्रह' को दी गई है।

भक्तिकाल के कवियों एवं विचारकों ने इसे जीवन की सरलता और सहजता की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकारते हुए कहा, 'साँई इतना दीजिये जामे कुटुम्ब समाये।' तुलसीदास ने गौधन, गजधन, बाजिधन और रत्नधन आदि को यह कहकर तिरस्कृत कर दिया कि 'जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।' यदि मनुष्य सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखता है, तो क्या वह अपने परिवार पर निर्भर रहकर ऐसा करेगा? नहीं। 'इशावस्य' उपनिषद में स्पष्ट रूप से ऐसे व्यक्ति के स्वावलम्बन की यह साहसिक भावना इन शब्दों में मुखर हुई है कि 'मनुष्य कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जिये। ध्यान दीजिये—'कर्म करता हुआ।'

पुनर्जागरण काल में भी बही यह चिंतन—धारा

स्वावलंबन की तीव्र इच्छा की शीतल धारा हमारे सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक जीवन में अनवरत रूप से प्रवाहित होती रही है। यहां तक कि आधुनिक काल में भी भारतीय पुनर्जागरण के दौर में हमारे चिंतक, दार्शनिक, समाज सुधारक एवं राजनेता इसे मुखरित करते रहे। इनमें स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के नाम उल्लेखनीय हैं। स्वामी विवेकानंद इसे व्यक्ति की संपूर्ण दृढ़ता के साथ जोड़कर देखते थे, तो गांधी जी ने इसे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के एक अस्त्र के रूप में कार्यान्वित किया। भविष्य के भारत के लिए उन्होंने देश के प्रत्येक गांव को स्वावलंबी बनाए जाने की बात कही। गांधी जी यह बात जानते थे कि भारतीय रक्त में स्वावलंबन के कण उपस्थित रहे हैं। इसका उपयोग देश की आजादी तथा उसके निर्माण के लिए किया जा सकता है।

‘हमारी भारत की भूमि पर राम और कृष्ण कर्म करते हैं। राजा (जनक) हल चलाते हैं। ऋषि सत्यकाम गौ चराते हैं। मुनि अगस्त्य ऋग्वेद में भूमि खोदते हैं। ऋग्वेद की इस उक्ति पर ध्यान दें— ‘अयं मे हस्तो भगवान्’। यानी यह मेरा हाथ भगवान है। पूरी की पूरी गीता कर्म के ही महत्व को प्रतिपादित करती है। इसमें कृष्ण स्पष्ट रूप से कहते हैं कि कर्म करना शरीर का धर्म है, और यदि वह ऐसा नहीं करेगा, तो नष्ट हो जायेगा। यहाँ कर्म (श्रम) के साथ शारीरिक अवलम्ब जुड़ा हुआ है। व्यक्ति को जीना है, लेकिन पूर्णतः स्वस्थ रहकर। और स्वस्थ है कौन? वह जो स्वयं में स्थित रहता है, पर में नहीं।

इस बारे में तो गौतम बुद्ध ने अपने जीवन के अंतिम शब्द ‘अप्य दीपोभव’ कहकर कमाल ही कर दिया। किसी भी बाहरी सहारे की जरूरत नहीं है। गुरु तक की भी नहीं। स्वयं को तपाओ और ‘स्वयं’ ही स्वयं का दीपक बनो।

इस प्रकार भारतीय चिंतन में हमें स्वावलम्बन के रूप में दो मुख्य स्तम्भ दिखाई देते हैं। इनमें पहला है—स्वतंत्र चेतना की विराटता तथा दूसरा है—

भौतिक लालसाओं की लघुता। सचमुच इसका अन्य कोई जोड़ नहीं है। अंत में इस शेर में स्वावलम्बन को तलाशने में कुछ वक्त लगाना उपयोगी होगा:

खुदी को कर बुलंद इतना
कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से ये पूछे,
बता तेरी रज़ा क्या है।

—साभार, दैनिक जागरण
दिनांक 19.10.2021

गूगल वॉयस टाइपिंग : अपनी आवाज के साथ हिन्दी में टाइप करें

अगर आपके कंप्यूटर में हिन्दी टाइपिंग की सुविधा नहीं है और आप हिन्दी में काम करना चाहते हैं तो ऑनलाइन सुविधाएं बेहतर विकल्प हो सकती हैं। इन ऑनलाइन टूल्स की मदद से सॉफ्टवेयर को डाउनलोड / इंस्टाल किए बिना हिन्दी में काम किया जा सकता है। हममें से अधिकांश लोगों को हिन्दी में टाइपिंग करना काफी श्रमसाध्य एवं कठिन कार्य लगता है। इस समस्या का समाधान विंडोज़, एंड्रॉयड तथा मैक आधारित विविध वॉयस रिकोगनिशन (recognition) सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया जा सकता है। एक आसान तरीके से गूगल डॉक्स दस्तावेज़ में अपनी आवाज के साथ टाइप कर सकते हैं। फिलहाल, यह सुविधा क्रोम ब्राउज़र पर ही उपलब्ध है। आप अपने कंप्यूटर और मोबाइल पर किस तरह से गूगल वॉयस टाइपिंग सेवा की सहायता से टाइप कर सकते हैं, इस लेख में उल्लेख किया गया है :

कंप्यूटर पर गूगल वॉयस टाइपिंग

विंडोज़ आधारित कम्प्यूटर में माइक्रोफोन प्लग—इन करके भी वॉयस टाइपिंग किया जा सकता है। इसके लिए ब्राउज़र ओपन कर अपना जीमेल एकाउन्ट ओपन करते हुए गूगल डॉक्यूमेंट ओपन कर लें और गूगल डॉक्स के टूल मैनु को माउस द्वारा क्लिक करते हुए वॉयस टाइपिंग मैनु सक्रिय करें। अब आप जो भी बोलेंगे वह गूगल डॉक्यूमेंट में टाइप हुआ पाएंगे।

कंप्यूटर पर गूगल वॉयस टाइपिंग के लिए स्टेप :

1. कंप्यूटर पर गूगल वॉयस टाइपिंग के लिए एक जी—मेल का अकाउंट होना जरूरी है।
2. सबसे पहले यह सुनिश्चित करें की आपके कंप्यूटर से एक माइक्रोफोन जुड़ा हुआ है और वह सही तरह से करता है।
3. क्रोम ब्राउज़र में <http://google.com> खोलें।
4. गूगल एप्स पर क्लिक करके More option में से गूगल डॉक्स ऐप पर क्लिक करके जी—मेल आईडी से लॉगिन करें।
5. गूगल डॉक्स में एक नया दस्तावेज़ खोलें।
6. उपकरण (Tool) मेनू > वॉयस टाइपिंग (Voice Typing) पर क्लिक करें। पॉप—अप माइक्रोफोन बॉक्स से भाषा (हिंदी) का चयन करे।
7. आप अपना टेक्स्ट बोलने के लिए तैयार हैं, तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें।
8. सामान्य गति और वोल्यूम (Volume) से स्पष्ट रूप से अपना टेक्स्ट बोलें।
9. रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुनः क्लिक करें।

आप पायेंगे की जो टेक्स्ट आप बोल रहे हैं, यथावत गूगल डॉक्स फाइल में टाइप हो जाता है। जितने स्पष्ट रूप से अपना टेक्स्ट बोलेंगे उतनी ही शुद्धता टाइप किए गए टेक्स्ट में पायेंगे। आवाज के साथ टाइप करते हुए अगर कुछ गलती हो जाए तो गलती पर कर्सर ले जाकर और माइक्रोफोन से पुनः बोल कर ठीक कर सकते हैं। गलती सुधारने के बाद, आप आवाज टाइपिंग जारी रखना चाहते हैं, वहाँ कर्सर वापस ले जाएं। इस फाइल को अपने नाम से रखकर कहीं से और कभी भी खोल कर काम कर सकते हैं।

एंड्रॉयड मोबाइल फोन पर गूगल वॉयस टाइपिंग

गूगल डॉक्यूमेंट में वॉयस टाइपिंग करने के लिए सर्वप्रथम अपने एंड्रॉयड डिवाइस के एकाउंट टेब में अपना जीमेल

एकाउन्ट लॉग-इन करें तथा प्लेस्टोर से गूगल डॉक्स ऐप डाउनलोड कर डिवॉयस में इंस्टाल कर ले।

अगले क्रम में गूगल डाक्यूमेंट को क्लिक कर ओपन कर लें। यह गूगल डॉक्यूमेंट आपके जीमेल एकाउन्ट से लिंकड होगा। डॉक्यूमेंट के टेक्स्ट एरिया को क्लिक करते ही माइक्रोफोनयुक्त टाइपिंग की-बोर्ड स्क्रीन पर आएगा। अब माइक्रोफोन को सक्रिय करें। अब जैसे ही माइक्रोफोन के चिह्न को क्लिक करेंगे उसका रंग बदल जाएगा। रंग बदलना इस बात का सूचक है वॉयस टाइपिंग हेतु डिवॉयस तैयार है। अब आप जो भी बोलेंगे वह टेक्स्ट एरिया में टाइप हुआ जाएगा।

मोबाइल फोन पर गूगल वॉयस टाइपिंग के लिए स्टेप :

1. Play Store में जाकर Google Indic Keyboard डाउनलोड करके इंस्टाल करें।
2. Setting >> Language and Input में जाकर Keyboard & Input Method में से Google Indic Keyboard को टाइप करें तथा Default में भी Google Indic Keyboard को चुनें, इसके अतिरिक्त गूगल वॉयस टाइपिंग विकल्प को भी टिक करें।
3. जिस भी एप्लीकेशन में टाइप करना हो, टाइप करने के लिए क्लिक करने पर की-बोर्ड उपलब्ध होगा। की-बोर्ड के ऊपरी दाईं हिस्से पर उल्लेख माइक्रोफोन बटन पर क्लिक करें।
4. Setting Option में जाकर हिंदी भाषा का चयन करें।
5. अब आपका फोन वॉयस टाइपिंग के लिए तैयार है। उपरोक्त प्रक्रिया को केवल एक बार ही करने की जरूरत होगी।
6. जब भी टाइप करना हो की-बोर्ड पर उपलब्ध माइक्रोफोन के बटन पर क्लिक करें और सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ

बोलें, इससे आप SMS, WhatsApp, E-mail, गूगल डॉक्स आदि पर वॉयस टाइपिंग कर सकेंगे।

शुद्ध टेक्स्ट पाने के लिए यह आवश्यक है कि टेक्स्ट सामान्य गति और वोल्यूम (Volume) से स्पष्ट रूप से बोलें। मोबाइल फोन में गूगल डॉक्स पर कार्य तथा कंप्यूटर में एक की गूगल अकाउंट होने पर गूगल डॉक्स में फाइलें एक समान ही रहेंगी। फाइलों पर कार्य आप मोबाइल तथा कंप्यूटर पर आसानी से कर सकेंगे। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि आप जो भी बोलते हैं वह इंटरनेट के माध्यम से गूगल सर्वर स्थित डेटाबेस में जाता है तथा वहाँ संबंधित भाषा के डेटाबेस से शब्द मिलान के पश्चात आपके डिवॉयस में टाइप होता है। इस प्रक्रिया के कार्यान्वयन हेतु

डिवॉयस का इन्टनेट से जुड़ा रहना अत्यंत आवश्यक है। इंटरनेट पर उपलब्ध गूगल वॉयस टाइपिंग टूल/एप्लीकेशन का उपयोग करके हिन्दी में काम किया जा सकता है। ई-मेल से लेकर पत्र टाइपिंग और लेख लिखने का कार्य ऑनलाइन इस टूल्स की सहायता से किया जा सकता है। इसके लिए न किसी सॉफ्टवेयर डाउनलोड करने की आवश्यकता है और न ही इंस्टालेशन का कोई झंझट। कंप्यूटर में सिर्फ इंटरनेट की आवश्यकता होती है। गूगल डॉक्स वॉयस टाइपिंग वर्तमान में 48 भाषाओं का समर्थन करता है, जिसमें चीनी, अंग्रेजी, पुर्तगाली और स्पेनिश के क्षेत्रीय संस्करण शामिल हैं।

—डॉ. नीरज चौरसिया

पलायन

गांव से तुम धीरे-धीरे यूं फरार हो गए
गांव में मकान मालिक थे शहर में किरायेदार हो गए
शहर छोड़कर लोग गांव आएंगे बोलते देखा है
मैंने उन्हें आज शहरों में जमीन खोजते देखा है।

डाकिया पता अब ताले से पूछता है
ताला भी तो अब जंग से जूझता है
चिट्ठी आई थी शहर में रहने वाले की
और डाकिया उसे गांव में ढूंढता है।

फर्श तन्हाईयों में घास सजाए लेटा था
नल पानी देने के लिए इंतजारी में बैठा था
आओ आओ मुझे अब तो खोल दो
नल में पानी आ गया है अब तो बोल दो।

अब तो गांव की खेती भी परीक्षा लेने लगी है
हमसे पहले जंगली जानवरों को भोजन देने लगी है
गांव में अकेले अब सोचने लगा हूं
परेशानियों में अब नाखून नोचने लगा हूं।

क्या करें यहां अब परेशानी बहुत हैं
पर ये दूर भी नहीं होने देता यहां निशानी बहुत हैं
पलायन एक बीमारी है इसकी दवा भी मिल जाएगी
कुछ बरसों की बात है फिर यहां खेती लहराएगी।

प्रस्तुती-पी.डी. कुकरेती
हिन्दी कक्ष, भा.प्रौ.सं. दिल्ली